By. Dr. Shailesh Kumar
Deptt. of economics
Raja Singh College
Siwan

निवेश और पूँजी का अर्थ

(Meaning of Investment & Capital)

साधारण बोलचाल की भाषा में निवेश का अर्थ है उन शेयरों, स्टॉक, ऋण-पत्रों तथा प्रतिभूतियों को खरीदना, जो पहले से स्टॉक-मार्किट में विद्यमान हों। परंतु यह वास्तविक निवेश नही है क्योंकि यह तो वर्तमान परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण मात्र है। निवेश में, इस प्रकार, नए प्लांट, बांध, सड़कों, बिल्डिंगों इत्यादि जैसे सार्वजनिक निर्माण कार्य, शुद्ध विदेशी निवेश, मालसूचियां और नई कम्पनियों के स्टॉक तथा शेयर, शामिल रहते हैं।

जॉन रॉबिन्सन के शब्दों में, "पूंजी-निवेश से तात्पर्य है पूंजी में वृद्धि, जो तब होती है जबकि कोई नया मकान बनाया जाए, अथवा कोई नई फैक्टरी लगाई जाए। निवेश का अर्थ है वस्तुओं के वर्तमान स्टॉक में वृद्धि करना।"

समय की एक अवधि के दौरान, वास्तविक पूंजी परिसम्पत्तियों का उत्पादन या प्राप्ति निवेश होता है। उदाहरणार्थ, मान लीजिए कि एक फर्म की पूंजी परिसम्पत्तियां 31 मार्च, 1987 को रु. 100 करोड़ हैं और 1987-88 वर्ष में 10 करोड़ रु. की दर से निवेश करती है। अगले वर्ष के अन्त में (31 मार्च, 1988) इसकी कुल पूंजी 110 करोड़ रु. होगी। प्रतीकात्मक रूप में, मानलीजिए कि I निवेश है और K वर्ष t में पूंजी है तब $I_t = K_t - K_{t-1}$.

पूंजी और निवेश एक दूसरे के साथ शुद्ध निवेश द्वारा सम्बद्ध होते हैं। एक वर्ष में नई पूंजी परिसम्पत्तियों पर किया गया कुल व्यय

Scanned by CamScanner

सफल निवेश होता है। परन्तु प्रत्येक वर्ष कुछ पूंजी गत स्टॉक टूट-फूट जाता है और मूल्यह्रास एवं अप्रचलन के लिए खप जाता है। शुद्ध (net) निवेश = सकल (gross) निवेश घटा मूल्यह्रास और अप्रचलन खर्चे या प्रतिस्थापन (replacement) निवेश। यह अर्थव्यवस्था के वर्तमान पूंजी स्टॉक में शुद्ध जमा होता है। यदि सकल निवेश बराबर है मूल्यह्रास के तो शुद्ध निवेश शून्य होता है तथा अर्थव्यवस्था के पूंजी स्टॉक में कोई वृद्धि नहीं होती है। यदि सकल निवेश मूल्यह्रास से कम है तो अर्थव्यवस्था मे विनिवेश (disinvestment) होता है तथा पूंजी स्टॉक कम हो जाता है। अतः अर्थव्यवस्था के वास्तविक स्टॉक में वृद्धि के लिए, सकल निवेश अवश्य मूल्य मूल्यह्रास से अधिक होना चाहिए, अर्थात शुद्ध निवेश होना चाहिए।

Scanned by CamScanner